श्री महाराज जी द्वारा आश्रम वासियों को लिखे पत्रों में वर्णित उपदेश

कभी-कभी श्री महाराज जी आश्रम से बाहर प्रवास के लिये भी जाया करते थे और कुछ समय तक आश्रम से बाहर रहा करते थे। परंतु इस काल में भी श्री महाराज जी आश्रम वासियों को अपने पत्रों द्वारा उपदेश दिया करते थे। यहाँ इन्हीं पत्रों में से कुछ उपदेश हम आपके हेतु उद्धृत कर रहे हैं।

१) जो अच्छी-अच्छी अपनी भलाई की उन्नति की बातें हैं उन्हीं का अमल किया करो।
२) ऐसा कर्म करो जिससे परमात्मा प्राप्त हो।
३) गौओं की सेवा, वृक्षों का पालन और परमेश्वर का भजन सदैव करो।
४) सभी कर्म परमात्मा के अर्पण किया करो।
५) हिंदु, ईसाई, मुसलमान इत्यादि सब भगवान के पुत्र हैं। सबका पिता एक परमात्मा है।
६) सभी को भाई-भाई के नाते से देखना चाहिये। हम सब के हैं और हमारे सब हैं।
७) हम सब परमात्मा के अंश हैं। उसी से उत्पन्न हुए हैं और उसी में लय हो जायेंगे।
८) वास्तव में वह परमात्मा ही सब कुछ है। उसको नमस्कार हो, धन्यवाद हो, सब कुछ उसके लिये हो।
९) उस परमात्मा के सिवाय कोई नहीं।
१०) जैसे मिट्टी के बर्तन, खिलौने सब मिट्टी ही है ऐसे ही हिंदु, मुसलमान, ईसाई इत्यादि सारा ब्रह्मांड उसका रूपहै।
११) रोम-रोम से और रक्त के कण-कण से उसका धन्यवाद हो, नमस्कार हो।
१२) सारे जगत का एक-एक परमाणु उसका धन्यवाद कर रहा है, यशोगान कर रहा है, प्रणाम कर रहा है।
१३) वह परमपिता परमात्मा ही हमारा अपना आप है। उसके सिवाय न कोई भाई है न बाप है।
१४) आप भुलाया आप में, बंध्यो आप ही आप। जाको तू ढूँढ़त फिरे सो तू आपै आप।।
१५) तुम सभी की एक दिन मुक्ति हो जायेगी, ज्ञान हो जायेगा। तब बहुतायत में एकता दीखने लग जायेगी।
१६) जैसे शीशे में मुख दीखे है, ऐसे ही सब में अपना आपा दीखने लग जायेगा।
१७) दूसरे को पानी पिलाते समय संकल्प करें कि इस पानी को जो पिये उसके रोम-रोम में भगवान की भक्ति हो।
१८) ऐसे ही भोजन पवित्र संकल्प कर, भगवान का नाम लेकर बनायें और खिलायें तो मनुष्यों को बहुत लाभ हो।
१९) इसी प्रकार बीज बोते समय शिव संकल्प करें।
२०) संतान उत्पन्न करने वाला गर्भाधान के समय "हमारे एक भगवान का भक्त हो" ऐसा संकल्प करे।
२१) सर्व कर्म, चेष्टायें और जो करो, सब भगवान को अर्पण करो। भगवान के लिये जीओ और उसी के लिये मरो।
२२) वह परम पिता परमात्मा क्षमाशील और दयालु है। तुमको भी क्षमाशील और दयालु बनना चाहिये।
२३) जो तुम अपने लिये चाहो वैसा ही दूसरों के लिये करो। सब अपने ही रूप हैं।
२४) तुम दूसरों को प्यार से प्रणाम करोगे तो वे भी तुमको प्यार से प्रणाम करेंगे।
२५) कुँए जैसी आवाज है। जैसी आवाज कुँए में लगाओगे, वैसी ही आवाज कुँए से आयेगी।
२६) तुम सबको जी कहकर बोलोगे, तो दूसरे भी तुम्हें जी कहकर बोलेंगे।
२७) तुम दूसरों की रक्षा करो तो दूसरे तुम्हारी रक्षा करेंगे। जब तुम दूसरों को दुःख दोगे तो दूसरे भी ऐसा ही करेंगे।
२८) देश के पुजारियों ने शूद्रों को दुःख दिया, वे बदले की भावना ले गजनी में जन्मे व यहाँ पुजारियों को दुःख दिया।
२९) इसीलिये कहा गया है कि अपना कर्म ही अपने लिये सुख-दुःख का कारण है।
३०) इसी लिये सभी के साथ प्रेम वर्तना चाहिये। प्रेम भगवान का स्वरूप है। प्रेम परमेश्वर के मिलने का साधन है।
३१) तुम्हारे सद्-विचार न केवल वाणी से अपितु कर्मों से भी प्रकट हों।
३२) एक भरोसा एक बल, एक आस विश्वास। परमेश्वर प्रति क्षण आपके रक्षक और सहायक हैं।
३३) तुम भगवान को एक पल ध्याओ तो वे तुम्हारा पलों तक ध्यान रखेंगे। जैसे कृष्ण ने युद्ध में भीष्म को ध्याया।
३४) हृदयाकाश रूपी सिंहासन पर विराजमान परमात्मा को जीवन रूपी पुष्प समर्पित कर उनका पूजन करो।
३५) सदैव अपने पवित्र आचरण से अपने कुटुम्ब, ग्राम और अपनी जाति को संसार में प्रसिद्ध करो।
३६) अपने माता-पिता की आज्ञा और सेवा में परमात्मा है ऐसा समझो।
३७) जो धर्म धारण किया हुआ है उस पर दृढ़ रहो। धर्म कभी न छोड़ो।
३८) प्राण भले जायें परंतु अपने कुल का नाम उज्वल करो।
३९) प्रेम सर्व शक्तिमान है, ये कभी व्यर्थ नहीं। तुम्हारे अंदर प्रेम प्रकट होने पर तुम्हारी शक्ति कोई रोक नहीं सकता।
४०) कहन सुनन की है नहीं लिखी पढ़ी नहीं जात, अपने जी ते जानियो मेरे जी की बात।।

बोलो सच्चिदानंद सनातन ब्रह्म की जय